चतुर्थ स्मृति व्याख्यान

(वेबिनार)

विष्णु श्रीधर वाकणकर

दि चीफ आर्किटेक्ट ऑफ रॉक स्टडीज इन इंडिया

(११ जून, २०२०)

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

नई दिल्ली

भारतीय शैलचित्र कला के 'पितामह' पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर जी के स्मरण में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि दृश्य विभाग द्वारा वाकणकर जी के शताब्दी वर्षोत्सव पर दिनांक 11 जून, 2020 को चतुर्थ वाकणकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन वेबिनार के माध्यम से किया गया। प्रस्तुत स्मृति व्याख्यानमाला का प्रारम्भ वर्ष 2017 से हुआ। पूर्व तीन स्मृति व्याख्यानों का वाचन क्रमशः डॉ0 जी0 बी0 देगलुरकर, पद्मश्री डॉ0 यशोधर मठपाल एवं प्रो0 अरविन्द पी0 जामखेड़कर द्वारा किया गया। वस्तुतः व्याख्यान का आयोजन प्रत्येक वर्ष डॉ0 वाकणकर जी के महानिर्वाण दिवस (3 अप्रैल) पर आयोजित किया जाता है, किन्तु कतिपय कारणों से इस वर्ष इसका आयोजन 11 जून, 2020 को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का आरम्भ प्रो0 बी0 एल0 मल्ला (विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य) जी ने स्मृति व्याख्यानकर्ता प्रो0 वी0 एच0 सोनावने (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, बड़ौदा विश्वविद्यालय), मुख्य अतिथि श्री के0 एन0 दीक्षित (महासचिव, दी इंडियन आर्कियोलॉजिकल सोसायटी, नई दिल्ली) एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो0 सच्चिदानंद जोशी जी (सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र) का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर किया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। तत्पश्चात डॉ0 मल्ला जी ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाने हेतु कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो0 सच्चिदानंद जोशी जी को निवेदन किया।

क्रमशः प्रो0 वी0 एच0 सोनावने, श्री के0 एन0 दीक्षित, प्रो0 बी0 एल0 मल्ला एवं प्रो0सच्चिदानंद जोशी जी

प्रो0 सच्चिदानंद जोशी जी ने सर्वप्रथम कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री के0 एन0 दीक्षित जी एवं मुख्य वक्ता प्रो0 वी0 एच0 सोनावने जी का स्वागत किया तथा वर्तमान की विषम परिस्थितियों में वेबिनार के माध्यम से आयोजित किये गए कार्यक्रमों के सकारात्मक पहलुओं पर सभी का ध्यान आकृष्ट किया, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के साथ–2 विदेश के अनेक विद्वतजनों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो0 सोनावने जी ने ***''विष्णु श्रीधर वाकणकरः दी चीफ आर्किटेक्ट ऑफ रॉक आर्ट स्टडीज इन इण्डिया''*** शीर्षक के माध्यम से भारतीय शैल चित्रकला के 'पितामह' पद्मश्री डॉ0 वी0 एस0 वाकणकर जी की भारतीय संस्कृति के संवहन में क्या योगदान रहा है, के विषय में विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। डॉ0 वाकणकर जी द्वारा प्रगैतिहासिक शैलचित्रों का 'स्वर्ग' विश्वदाय पुरास्थल भीमबेटका, जो उच्च–पुरापाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के शैलचित्रों के रूप में भारतीय संस्कृति के सभ्यता में परिणत होने की शब्दरहित व्याख्या को प्रदर्शित करते हैं, की वर्ष 1957 में खोज की गयी जिसने भारतीय इतिहास के अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान की तथा अनेक पुरातत्त्ववेत्ताओं, शोधार्थियों व विद्यार्थियों का ध्यान शैलचित्र कला अध्ययन की ओर आकृष्ट किया। परास्नातक के दौरान प्रो0 सोनावने जी ने 1970 में प्रथम बार वाकणकर जी को ''भीमबेटका के शैलचित्रों'' पर प्रस्तुती करते हुए सुना और प्रभावित हो अपने शोध के विषय के रूप में शैल चित्रकला विषय का चयन किया। प्रो0 सोनावने द्वारा वर्ष 1976 में राजस्थान के सिरोही जिले के चंद्रावती पुरास्थल से प्राप्त चर्ट (एक प्रकार का पत्थर) कोर, जिसपर ज्यामितीय डिजाइन उकेरी हुई थी, की पहचान हेतु एक छायाचित्र डॉ0 वाकणकर जी को भेजा। डॉ0 वाकणकर जी ने कोर पर किये गए फलकीकरण (Flaking) के आधार पर

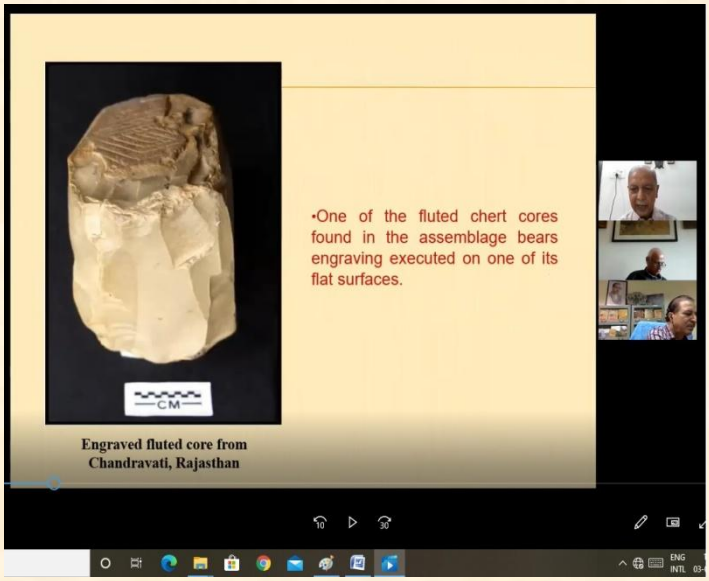

चंद्रावती पुरास्थल से प्राप्त ज्यामितीय अलंकरणयुक्त चर्ट कोर

उसका काल उच्च पुरापाषाणकालीन बतलाया, जिसने शैलचित्रों के तिथिनिर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1980 में वल्लभीपुर (गुजरात) पुरास्थल के उत्खनन के दौरान समीप के चमरडी ग्राम के शैलाश्रय से दो नावों के शैलचित्र प्राप्त हुए इन चित्रों की खोज डॉ0 वाकणकर जी ने भी किया था जिसका रेखाचित्र प्रो0 सोनावने जी के पास स्मृति के रूप में है। यह शैलचित्र छठी–सातवीं शताब्दी में वल्लभी के विदेशी व्यापर को प्रदर्शित करते है। डॉ0 वाकणकर जी ने अनेक पुरास्थलों जैसे– नावदाटोली, आवरा, माहेश्वर, कायथा, दंगवाड़ा आदि का उत्खनन करवाया था जिनमें दंगवाड़ा से प्राप्त ***यज्ञशाला*** के प्रमाण प्रमुख है। प्रो0 सोनावने जी ने गुजरात की हड़प्पा कालीन पुरास्थल वागड़ से प्राप्त अग्निकुण्डों का दंगवाड़ा से प्राप्त प्रमाण के साथ तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर तथा आकृति के आधार पर ***यज्ञशाला*** बताया जिसने सनातन धर्म की सतत निरंतरता को प्रमाणित किया। इस प्रकार शैलचित्र कला के साथ ही भारतीय इतिहास व संस्कृति के अन्य पहलुओं को भी व्याख्यायित करने में डॉ0 वाकणकर जी के अप्रितम योगदान पर भी प्रो0 सोनावने जी ने प्रकाश डाला।

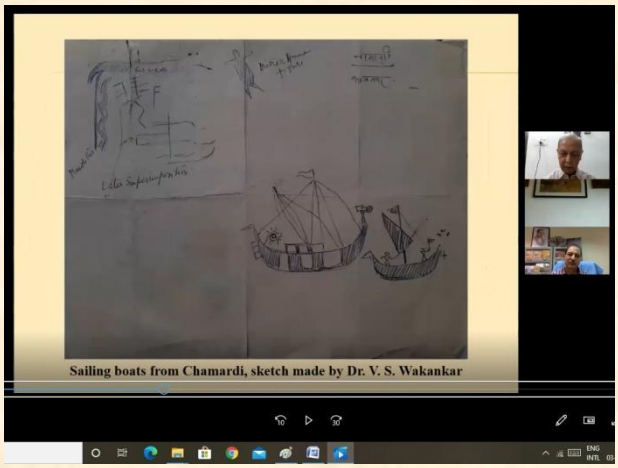

डॉ0 वाकणकर जी द्वारा चमरडी ग्राम (गुजरात) से प्राप्त शैलचित्र का रेखाचित्र

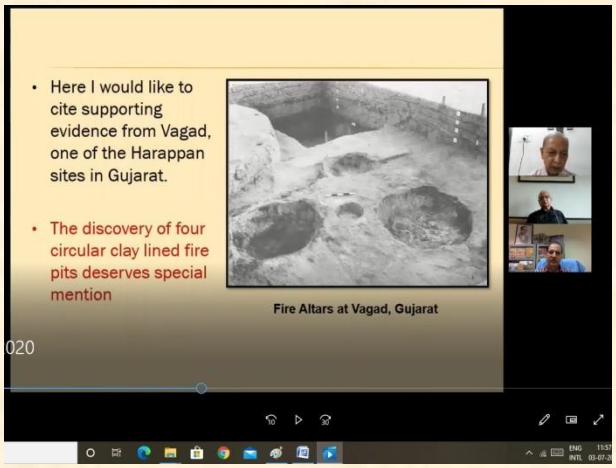

हड़प्पा कालीन पुरास्थल वागड़ (गुजरात) से प्राप्त *यज्ञशाला*

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री के0 एन0 दीक्षित जी ने वर्ष 1957 में डॉ0 वाकणकर जी के साथ हुई बैठक के विषय के कुछ अंशों को उद्धरित किया तथा बताया कि किस प्रकार से डॉ0 वाकणकर जी ने भारतीय इतिहास के उपेक्षित भाग को अध्ययन व शोध का विषय बनाया जिसका अनुशरण कालान्तर में डॉ0 यशोधर मठपाल, डॉ0 जगदीश गुप्ता, डॉ० राकेश तिवारी

आदि नें किया तथा वर्तमान तक किया जा रहा है। शैलचित्र मानव के आखेटक –खाद्यसंग्राहक से सभ्यता के विकासोन्मुख चरणों को प्रदर्शित करते है तथा आज भी ग्रामीण भागों में निवास करने वाली जनजातियों में जीवंत कला के रूप में मौजूद हैं। श्री दीक्षित जी ने शैल चित्रकला अध्ययन के लिए पृथक विभाग व विषय के रूप में करने हेतु इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव प्रो0 सच्चिदानन्द जोशी व आदि दृश्य विभाग के विभागध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला को धन्यवाद ज्ञापित किया।

मुख्य अतिथि श्री के0 एन0 दीक्षित जी द्वारा कार्यक्रम सम्बोधन

प्रो0 सच्चिदानन्द जोशी जी ने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ0 वाकणकर जी के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तथा शैलचित्र कला विषय पर किये गए शोध के अतिरिक्त उनके दो अन्य महत्वपूर्ण कार्यों पर भी प्रकाश डाला। प्रथम, वैदिक सरिता सरस्वती के विलुप्त प्राचीन प्रवाह पथ की खोज तथा सम्बंधित शोध व भारतीय सभ्यता के विकास में सरस्वती नदी की उपयोगिता, तथा द्वितीय वर्ष 1985 में उज्जैन के डोंगला ग्राम में खगोलीय घटनास्थल, जहाँ पर कर्क रेखा व स्थानीय रेखांश का कटावबिंदु की खोज है। इस स्थल पर ग्रीष्मऋतु में अयन काल में 21 जून को सूर्य बिल्कुल सिर के ऊपर होता और दोपहर 12 बजे सूर्य की

प्रो0 सच्चिदानन्द जोशी जी द्वारा अध्यक्षीय सम्बोधन

किरणें भूमि पर 90° अंश का कोंण बनाती है जिससे किसी भी वस्तु आदि की प्रतिछाया नहीं बनती। डॉ0 वाकणकर ने इसे काल गणना का प्रारम्भिक बिंदु मानकर समय की गणना GMT के बजाय DMT(डोंगला मीन टाइम) में करने के मत का प्रतिपादन किया। प्रो0 जोशी जी ने प्राचीन भारतीय सभ्यता के ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन के नवीन परिदृश्यों एवं खगोलशास्त्रीय अध्ययन के लिए डॉ0 वाकणकर के कार्यों को केंद्रबिंदु मानकर शोध करने की आवश्यकता पर बल दिया। अंततः मुख्य अतिथि श्री दीक्षित एवं मुख्य वक्ता प्रो0 सोनावने जी को कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु ध्न्यवाद दिया व स्मृति व्याख्यान की पुस्तिका का विमोचन किया।

प्रो0 सच्चिदानन्द जोशी जी एवं प्रो0 बी0 एल0 मल्ला द्वारा स्मृति व्याख्यान पुस्तिका का विमोचन

स्मृति व्याख्यान के पश्चात् **''रॉक आर्ट ऑफ इण्डिया''** विषय पर डाक्यूमेंट्री की स्ट्रीमिंग किया गया जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों को भौगोलिक आधार पर 6 भागों में विभक्त कर, उत्तरी क्षेत्र (कश्मीर, जम्मू, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश), पूर्वी क्षेत्र (बिहार, झारखण्ड, ओडिशा व प0 बंगाल), उत्तर–पूर्व (आसाम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश), मध्य क्षेत्र (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़), पश्चिमी क्षेत्र (राजस्थान, गुजरात व

महाराष्ट्र) तथा दक्षिणी क्षेत्र (कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना व आंध्र प्रदेश), संबंधित क्षेत्र की शैल चित्रकला की विशेषताओं, विषय, तकनीक आदि के आधार पर विस्तृत रूप से प्रदर्शन किया गया।

अंत में प्रो0 मल्ला जी ने सभी आगन्तुकों तथा प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

उपरोक्त कार्यकर्मों के माध्यम से अधिकतम विद्वतजनों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों आदि को शैल चित्रकला विषय के अध्ययन से जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों, शैक्षणिक संस्थानों तथा संस्कृति मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि से सम्बंधित अनेक संस्थाओं को ई@मेल, वाट्सअप, ट्विटर, फोन आदि के माध्यम लगभग 2000 से अधिक लोगों को अवगत किया गया फलतः 1343 लोगों ने कार्यक्रम में पंजीकरण किया तथा लगभग 600 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से ऑनलाइन जुड़े। प्रतिभागियों को ई– प्रमाण पत्र एवं व्याख्यान पुस्तिका के डाउनलोड करने सम्बन्धी IGNCA का लिंक ई@मेल किया गया। कार्यक्रम से सम्बंधित रिपोर्ट, विहंगम रिपोर्ट एवं व्याख्यान पुस्तिका को IGNCA की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। कार्यक्रम की ऑनलाइन रिकार्डिंग को संपादन के पश्चात् यू–ट्यूब पर अपलोड करने हेतु संचार केंद्र (Media Centre) को वीडियो प्रेषित किया गया।

आभार

उपरोक्त वेबिनार का आयोजन इं० गाँ० रा० क० के० के माननीय सदस्य सचिव प्रो० सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरूप तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला जी के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, श्रीमती रीता रावत, सुश्री सुपर्णा डे एवं श्री प्रमोद कुमार आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप संभव हो सका, आप सभी के साझा प्रयास का ही परिणाम रहा कि वेबिनार में लगभग 700 से अधिक प्रतिभागियों की ऑनलाइन उपस्थिति रही जिससे संस्था का मुख्य उद्देश्य, जिसमें विषय के ज्ञाताओं के साथ ही युवा पीढ़ी को वाकणकर जी के जीवन की उपलब्धियों तथा भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी गहन राष्ट्रीय चिंतन व विचारधारा से अवगत कराने का वास्तविक प्रयोजन सफल हो सका। अंततः इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना

प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार का कोटिशः धन्यवाद जिनके सहयोग से वेबिनार का आयोजन किया जा सका।

डॉ० दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली